संकल्प मंत्र सिद्ध विधि

osir.in/संकल्प-मंत्र/

November 23, 2022

संकल्प मंत्र sankalp mantra : हेलो दोस्तों नमस्कार स्वागत है आपका हमारी आज के इस नए लेख में आज हम आप लोगों को इस लेख के माध्यम से संकल्प मंत्र के बारे में बताने वाले हैं.

हमारे हिंदू धार्मिक शास्त्रों के मुताबिक किसी भी प्रकार की पूजा पाठ करने से पहले संकल्प मंत्र किया जाना बेहद आवश्यक होता है ऐसा कहा जाता है कि जिस पूजा से पहले संकल्प मंत्र नहीं किया जाता है वह पूजा अधूरी मानी जाती है.

साथ ही उस पूजा का कोई भी फल प्राप्त नहीं होता है हमारे हिंदू धर्म के अनुसार ऐसा बताया गया है कि किसी भी पूजा पाठ को शुरू करने से पहले संकल्प लेना अनिवार्य है यदि आप पूजा करने से पहले संकल्प नहीं लेते हैं तो आपकी पूजा का फल इंद्रदेव को प्राप्त होता है.

इसीलिए आपको किसी भी पूजा को करने से पहले संकल्प अवश्य लेना चाहिए इतना ही नहीं बल्कि यह भी बताया गया है कि अगर आप प्रतिदिन पूजा पाठ करते हैं.

तो उसमें भी आपको संकल्प मंत्र का जाप करना आवश्यक है संकल्प लेने का अर्थ यह होता है कि इष्टदेव और स्वयं को साक्षी मानकर संकल्प ले कि हम यह पूजा कार्य विभिन्न इच्छाओं की कामना पूर्ति के लिए कर रहे हैं और इस पूजा को संपूर्ण अवश्य करेंगे.

अगर आप एक बार पूजा का संकल्प ले लेते हैं तो तो उस पूजा को पूर्ण करना आवश्यक होता है। अगर आप ऐसा करते हैं तो आपकी संकल्प शक्ति मजबूत हो जाती है और उस व्यक्ति को विपरीत परिस्थितियों का सामना करने में साहस प्रदान करती हैं।

इसीलिए आज हम आप लोगों को इस लेख के माध्यम से संकल्प मंत्र के बारे में बताने वाले हैं उसका जाप कैसे करना है और उसके फायदे क्या है.

यह भी बताएंगे अगर आप इस विषय को विस्तार से जानना चाहते हैं तो हमारे इस लेख को अंत तक अवश्य पढ़ें ताकि आप लोगों को इसकी संपूर्ण जानकारी प्राप्त हो सके।

संकल्प का मंत्र क्या हैं ? | Sankalp ka mantra kya hai ?

हमारे हिंदू धर्म के मुताबिक ऐसा कहा गया है कि किसी भी प्रकार के पूजा-पाठ को करने से पहले संकल्प मंत्र लेना बेहद आवश्यक होता है अगर कोई व्यक्ति किसी भी पूजा पाठ को शुरू करता है और उससे पहले संकल्प मंत्र का जाप नहीं करता है.

तो उसकी पूजा अधूरी मानी जाती है साथ ही उस पूजा का कोई भी महत्त्व या फिर उसका फल नहीं प्राप्त होता है इसीलिए हिंदू मान्यताओं के अनुसार किसी भी पूजा पाठ को शुरू करने से पहले संकल्प लेना आवश्यक है यदि आप संकल्प नहीं लेते हैं तो आपकी पूजा का फल इंद्रदेव को प्राप्त हो जाता है।

संकल्प कैसे लेते हैं ? | Sankalp kaise lete hai ?

अगर आप लोग संकल्प लेना चाहते हैं तो आपको संकल्प लेते समय अपने हाथ में **पान के पत्ते सुपारी , अक्षत , पुष्प , दक्षिणा और जल** को लेकर संकल्प मंत्र को पढ़ना है।

लेकिन अगर आप अपने घर पर प्रतिदिन पूजा करते हैं और आपको संस्कृत पढ़ने में परेशानी होती है तो आप ऐसा भी कर सकते हैं कि आप पूजा शुरू करने से पहले अपनी भाषा में अपने मन में संकल्प ले ले कि आप यह पूजा किस कारण वर्ष कर रहे हैं और उसी प्रकार आप अपने मन को एक दिशा दे पाएंगे।

ऐसा कई लोग कहते हैं कि भगवान भाव के भूखे होते हैं वैसे तो देखा जाए वह भाव सही मायने में बनना चाहिए इसीलिए या भाव बनाने में संकल्प हमारी मदद करता है।

क्या आप जानते हैं कि संकल्प हमारे मन की दृढ़ इच्छा शक्ति बढ़ाने में हमारी मदद करता है अगर हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं तो इस संकल्प मंत्र का जाप अवश्य करें क्योंकि यह लक्ष्य को प्राप्त करने की ओर तेजी से कदम बढ़ाने लगता है।

वैसे आज हम आप लोगों को संकल्प लेने में निम्न जानकारी का प्रयोग करते हैं वह बताने वाले हैं।

- पूजा के समय आपको जिस स्थान पर आप पूजा कर रहे हैं उस शहर या फिर गांव का नाम लेना है।
- जिस व्यक्ति के लिए पूजा हो रही है उसका नाम लेना है और गोत्र भी नाम लेना है अगर मालूम हो तो।
- जिस डेट में पूजा हो रही है उसका नाम लेना है।
- जिस दिन पूजा हो रही है उसका नाम भी लेना है।
- जिस पक्ष यानी कि जिस कार्य के लिए यह पूजा हो रही है उसकी जानकारी भी संकल्प देने में किया जाता है।
- संवत्सर का भी नाम लिया जाता है।

संकल्प मंत्र का जाप कैसे करें | Sankalp mantra kaise bola jata hai

अगर आप लोग संकल्प मंत्र का जाप करना चाहते हैं तो आपको इसके लिए संकल्प लेते समय हाथ में जल अक्षर और फूल लेना है वैसे तो पूरी सृष्टि के **पंचमहाभूतो जैसे अग्नि , पृथ्वी , आकाश , वायु और जल** में से भगवान श्री गणेश जी का जल तत्व में अधिपति हैं उसके बाद भगवान श्री गणेश के सामने संकल्प लेना है जिससे आपको भगवान श्री गणेश की कृपा से पूजा कर्म बिना किसी बाधा के पूर्ण हो जाए।

उसके बाद अपने दाहिने हाथ में जल पुष्प, सिक्का अक्षत लेकर संकल्प मंत्र का उच्चारण करना है।

संकल्प मंत्र | sankalp mantra

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु:,

ॐ अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे,

कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे पुण्य (अपने नगर/गांव का नाम लें) क्षेत्रे बौद्धावतारे वीर विक्रमादित्यनृपते : तमेऽब्दे प्लवंग नाम संवत्सरे दक्षिणायने

……. ऋतो महामंगल्यप्रदे मासानां मासोत्तमे ……. मासे …… पक्षे …….. तिथौ …….

वासरे (गोत्र का नाम लें) गोत्रोत्पन्नोऽहं अमुकनामा (अपना नाम लें)

सकलपापक्षयपूर्वकं सर्वारिष्ट शांतिनिमित्तं सर्वमंगलकामनया- श्रुतिस्मृत्योक्तफलप्राप्त्यर्थं मनेप्सित कार्य सिद्धयर्थं श्री ………..

(जिस देवी.देवता की पूजा कर रहे हैं उनका नाम ले)

पूजनं च अहं करिष्ये।

तत्पूर्वागंत्वेन निर्विघ्नतापूर्वक कार्य सिद्धयर्थं यथामिलितोपचारे गणपति पूजनं करिष्ये।

जैसे ही आप इस संकल्प मंत्र को पूर्ण कर देते हैं उसके बाद आप अपने हाथ में जितनी भी सामग्री लिए हुए हैं वह उसी जगह पर नीचे छोड़ दें।

अमुक स्थाने	**कार्य का स्थान**
अमुक संवत्सरे	**संवत्सर का नाम**
अमुक अयने	**उत्तरायन/दक्षिणायन**
अमुक ऋतौ	**वसंत आदि छह ऋतु हैं**
अमुक मासे	**चैत्र आदि 12 मास हैं**
अमुक पक्षे	**पक्ष का नाम (शुक्ल या कृष्ण पक्ष)**
अमुक तिथौ	**तिथि का नाम**
अमुक वासरे	**दिन का नाम**
अमुक समये	**दिन में कौन सा समय**

इस संकल्प मंत्र के माध्यम से आप अपनी पूजा-अर्चना को संपूर्ण तरह से पूर्ण कर सकते हैं।

दुर्गा पूजा संकल्प मंत्र | Durga puja sankalpa mantra

मैंने अधिक से अधिक लोगों को देखा है कि मां दुर्गा की कृपा को प्राप्त करने के लिए लोग तरह-तरह के उपाय करते हैं मगर आज तक उन्हें मां दुर्गा की कृपा प्राप्त नहीं हुई है इसीलिए आज हम आप लोगों को एक ऐसे संकल्प मंत्र के बारे में बताने वाले हैं.

जिसकी मदद से आप मां दुर्गा की कृपा को प्राप्त कर सकते हैं अगर आपने उस मंत्र का सही से उच्चारण जाप किया तो आपको मां दुर्गा की असीम कृपा प्राप्त होगी जो मंत्र आपको पाने की इच्छा थी इस मंत्र का जाप आप अपने घर पर प्रतिदिन कर सकते हैं.

लेकिन इसके लिए आपको अपने अंदर श्रद्धा और भक्ति लानी होगी हमारे ज्योतिष विज्ञान द्वारा बताया गया है कि इस मंत्र में वह शक्ति है जिसकी मदद से मां दुर्गा जल्द ही प्रसन्न हो जाती हैं और अपने भक्तों की सारी परेशानियां दूर कर देती है।

माता की संकल्प मंत्र

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः,

ॐ अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे,अष्टाविंशतितमे कलियुगे,

कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे पुण्य (अपने नगर/गांव का नाम लें) क्षेत्रे बौद्धावतारे वीर विक्रमादित्यनृपते : ,

तमेऽब्दे प्रमादी नाम संवत्सरे दक्षिणायने शरद ऋतो महामंगल्यप्रदे मासानां मासोत्तमे आश्विन मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदायां तिथौ शनि वासरे (गोत्र का नाम लें)

गोत्रोत्पन्नोऽहं अमुकनामा (अपना नाम लें)

सकलपापक्षयपूर्वकं सर्वारिष्ट शांतिनिमित्तं सर्वमंगलकामनया- श्रुतिस्मृत्योक्तफलप्राप्त्यर्थं मनेप्सित कार्य सिद्धयर्थं श्री दुर्गा पूजनं च अहं करिष्ये। तत्पूर्वागंत्वेन निर्विघ्नतापूर्वक कार्य सिद्धयर्थं यथामिलितोपचारे गणपति पूजनं करिष्ये।

हमारे हिंदू धर्म में ऐसा बताया गया है कि किसी भी पूजा को करने से पहले भगवान गणेश की पूजा की जाती है तभी वह पूजा संपन्न मानी जाती है.

इसीलिए अगर आप लोग माता दुर्गा की पूजा कर रहे हैं तो उसमें आपको विघ्नहर्ता की पूजा अवश्य करनी चाहिए उनके मंत्र का पाठ करके और उनकी पूजा अवश्य करें तभी आपकी पूजा संपन्न मानी जाएगी।

अगर आप लोग भगवान गणेश की पूजा करते हैं तो माता दुर्गा जल्द ही प्रसन्न हो जाती हैं क्योंकि मां दुर्गा का सबसे प्रिय पुत्र गणेश को माना जाता है अगर कोई व्यक्ति गणेश की पूजा करता है तो मां की कृपा बड़ी आसानी से प्राप्त हो जाती है.

अगर आपकी किसी भी कार्य में विघ्न उत्पन्न हो रहा है तो आपको उस विघ्न को दूर करने के लिए भगवान गणेश की पूजा करनी चाहिए भगवान गणेश की पूजा करके माता की कृपा को प्राप्त किया जा सकता है।

पूजन शुरू करने के पूर्व अवश्य पढ़े

1. पूजा शुरू करने से पहले आपको स्नानादि से संपन्न हो जाना है उसके बाद ही पूजा के लिए बैठना है।
2. वैसे तो भगवान गणेश की पूजा का अधिकार सभी लोगों को दिया जाता है।
3. पूजा के समय आपको पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठना चाहिए।
4. पूजा में लगने वाली सामग्री को एकत्रित कर ले।
5. पूजा शुरू करने से पहले अपने आसपास इस तरह से पूजा सामग्री को रख ले जिससे अनिवार्य चीजें आपके पास रहें और पूजा में कोई भेजना उत्पन्न ना हो।
6. पूजा आपको श्री गणेश की प्रतिमा के सामने ही करना है।

श्री गणेशजी की प्रतिमा न होने पर

अगर आपके पास गणेश भगवान की प्रतिमा नहीं है तो आपको एक सुपारी लेकर उस पर नाड़ा लपेटना है और उसको देखकर गणेश भगवान का आवाहन करें उसके बाद पाटे पर अन्न बिछाकर उस पर गणेश भगवान को स्थापित कर देना है उसके बाद उस सुपारी पर ही संपूर्ण पूजा की जाएगी।

अगर आप श्री गणेश भगवान की मूर्ति मिट्टी की मूर्ति का पूजन कर रहे हैं तो आपको उस मूर्ति के स्थान पर स्नान कराना है पंचामृत से स्नान कराने के बाद एक सुपारी पर नाड़ा लपेटकर उसे सुपारी को गणेश भगवान की प्रतिमा के सामने स्थापित कर देना है स्नान पंचामृत स्नान अभिषेक इत्यादि कार्य कार्य सुपारी पर ही किए जाते हैं गणेश भगवान की मूर्ति पर नहीं।

पूजन प्रारंभ

पूजा प्रारंभ करने से पहले आपको एक शुद्ध देसी घी का दीपक प्रज्वलित करना है दाहिनी तरफ इष्ट देव को अच्छा बिछड़ा कर उस पर रख दे दीप प्रज्वलित करें हाथ को धो लें।

दीप पूजन

अपने हाथों में गंध एवं पुष्प लेकर निम्न मंत्रों का जाप करें और उस दीपक पर गंध पुष्प अर्पित कर दें।

मंत्र

'ॐ दीप ज्योतिषे नमः' प्रणाम करें।

(उक्त मंत्र बोलकर गंध व पुष्प, दीपक पर अर्पित करें)

आचमन :- उसके बाद निम्न मंत्र बोलते हुए तीन बार आचमन कराएं।

ॐ केशवाय नमः

स्वाहा (आचमन करें.

ॐ नारायणाय नमः

इस जानकारी को सही से समझने
और नई जानकारी को अपने ई-मेल पर प्राप्त करने के लिये OSir.in की अभी मुफ्त सदस्यता ले !

हम नये लेख आप को सीधा ई-मेल कर देंगे !
(हम आप का मेल किसी के साथ भी शेयर नहीं करते है यह गोपनीय रहता है)

▼▼ यंहा अपना ई-मेल डाले ▼▼

Join 828 other subscribers

★ सम्बंधित लेख ★

☙ पढ़े थोड़ा हटके ☙

► 9 टॉपिक- गर्लफ्रेंड / लड़की से फोन पर क्या बात करें ? What to talk to girlfriend on phone?

स्वाहा (आचमन करें.

ॐ माधवाय नमः स्वाहा

आचमन करें.

(निम्न मंत्र बोलकर हाथ धो लें)

ॐ ह्रषीकेशाय नमः हस्तम् प्रक्षालयामि
तत्पश्चात तीन बार प्राणायाम करें।

पवित्रकरण

आचमन करने के बाद अपने ऊपर एवं पूजा सामग्री पर निम्न मंत्र बोलकर जल चढ़ाएं।

– 'ॐ अपवित्रह पवित्रो वा सर्व-अवस्थाम् गतो-अपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरी-काक्षम् स बाह्य-अभ्यंतरह शुचि-हि॥
ॐ पुण्डरी-काक्षह पुनातु।'

(पश्चात् निम्न मंत्रों का पाठ करें)-

स्वस्तिवाचन : स्वस्ति न इन्द्रो वृद्ध-श्रवाहा स्वस्ति नह पूषा विश्व-वेदाहा।
स्वस्ति नह-ताक्ष्-र्यो अरिष्ट-नेमिति स्वस्ति नो बृहस्पतिहि-दधातु॥
द्यौहो शन्ति-हि-अन्तरिक्ष (गुं) शान्तिर्-हि शान्तिहि-आपह।
शान्ति हि ओषधयह् शान्तिहि।
वनस्-पतयह-शान्तिहि विश्वे देवाहा शान्तिहि ब्रह्म शान्तिहि सर्व (गुं)
शान्ति हि एव शान्तिहि सा मा शान्ति हि- ऐधि॥
यतो यतह समिहसे ततो न अभयम् कुरु।
शम् नह कुरु प्रजाभ्योअभयम् नह पशुभ्यहा॥
सुशान्तिहि भवतु।
श्रीमन् महागण अधिपतये नमह।
लक्ष्मी-नारायणाभ्याम् नमह। उमामहेश्वराभ्याम् नमह।
मातृ पितृ चरण कमलैभ्यो नमह।
इष्ट-देवताभ्यो नमह। कुलदेवताभ्यो नमह।
सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमह। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमह।
सुमुखह एक-दन्तह च। कपिलो गज-कर्णकह।
लम्बोदरह-च विकटो विघ्ननाशो विनायकह॥1॥
धूम्रकेतुहु-गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननह।
द्वादश-एतानि नामानि यह पठेत् श्रृणुयात-अपि॥2॥

विद्या-आरम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे च-एव विघ्न-ह-तस्य न जायते॥3॥
वक्रतुण्ड महाकाय कोटि-सूर्य-समप्रभ ।
निर-विघ्नम् कुरु मे देव सर्व-कार्येषु सर्वदा॥4॥

संकल्प

अपने दाहिने हाथ में जल अक्षत और द्रव्य लेकर संकल्प मंत्र बोले ।

(यह लेख आप OSir.in वेबसाइट पर पढ़ रहे है अधिक जानकारी के लिए OSir.in पर जाये)
' ऊँ विष्णु र्विष्णुर्विष्णु :

श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पै वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलि प्रथमचरणे

भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारत वर्षे भरत खंडे आर्यावर्तान्तर्गतैकदेशे —*— नगरे —— ग्रामे वा बौद्धावतारे विजय नाम संवत्सरे**

श्री सूर्ये दक्षिणायने वर्षा ऋतौ महामाँगल्यप्रद मासोत्तमे

शुभ भाद्रप्रद मासे शुक्ल पक्षे चतुर्थ्याम् तिथौ

भृगुवासरे हस्त नक्षत्रे शुभ योगे गर करणे तुला राशि स्थिते

चन्द्रे सिंह राशि स्थिते सूर्य वृष राशि स्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु च यथा यथा राशि स्थान स्थितेषु सत्सु

एवं ग्रह गुणगण विशेषण विशिष्टायाँ चतुर्थ्याम् शुभ पुण्य तिथौ — +– गौत्रः –++– अमुक शर्मा, वर्मा, गुप्ता, दासो ऽहं मम आत्मनः

श्रीमन् महागणपति प्रीत्यर्थम् यथालब्धोपचारैस्तदीयं पूजनं करिष्ये ।"
इसके पश्चात् हाथ का जल किसी पात्र में छोड़ देवें ।

गणपति पूजन प्रारंभ

आवाहन

नागास्यम् नागहारम् त्वाम् गणराजम् चतुर्भुजम् ।
भूषितम् स्व-आयुधै-है पाश-अंकुश परश्वधैहै॥
आवाह-यामि पूजार्थम् रक्षार्थम् च मम क्रतोहो ।
इह आगत्व गृहाण त्वम् पूजा यागम् च रक्ष मे॥
ॐ भू-हू भुवह स्वह सिद्धि-बुद्धिसहिताय गण-पतये नमह,
गणपतिम्-आवाह-यामि स्थाप-यामि ।

(गंधाक्षत अर्पित करें ।)

प्रतिष्ठापन

आवाहन के पश्चात देवता का प्रतिष्ठापन करें-
अस्यै प्राणाहा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाह क्षरन्तु च।
अस्यै देव-त्वम्-अर्चायै माम-हेति च कश्चन॥
ॐ भू-हू भुवह स्वह सिद्धि-बुद्धि-सहित-गणपते सु-प्रतिष्ठितो वरदो भव।

आसन अर्पण

उसके बाद निम्न मंत्र बोलकर पुष्प अर्पित करें।

ॐ भूहू-भुवह सिद्धि-बुद्धि-सहिताय महा-गणपतये नमह, आसनम् समर्पयामि।

पाद्य, अर्ध्य, आचमनीय, स्नानीय, पुर-आचमनीय-अर्पण

मंत्र

ॐ भूहू-भुवह सिद्धि-बुद्धि-सहिताय महा-गणपतये नमह, एतानि पाद्य, ऽर्ध्य, आचमनीय, स्नानीय, पुनर-आचमनीययानि समर्पयामि।'

उसके बाद उक्त मंत्र बोलकर जल छोड़ दे।

पञ्चामृत स्नान

इसके पश्चात नीचे दिए गए मंत्रों को पढ़कर पंचामृत से गणेश भगवान को स्नान करें।

ॐ भूहू-भुवह सिद्धि-बुद्धि-सहिताय महा-गणपतये नमह, पंचामृत-स्नानम् समर्पयामि।
पंचामृत-स्नान-अन्ते शुद्ध-उदक-स्नानम् समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नान

पश्चात् शुद्ध जल से स्नान कराएँ।

ॐ भूहू-भुवह सिद्धि-बुद्धि-सहिताय महा-गणपतये नमह्, शुद्ध-उदक स्नानम् समर्पयामि।

वस्त्र-उपवस्त्र समर्पण

ॐ भूहू-भुवह सिद्धि-बुद्धि-सहिताय महा-गणपतये नमह्, वस्त्रम्-उपवस्त्र समर्पयामि।

यज्ञोपवित समर्पण

ॐ भूहू-भुवह सिद्धि-बुद्धि-सहिताय महा-गणपतये नमह, यज्ञो-पवीतम् समर्पयामि।

गन्धव अक्षत

ॐ भूहू-भुवह सिद्धि-बुद्धि-सहिताय महा-गणपतये नमह्, गन्धम् समर्पयामि।
ॐ भूहू-भुवह सिद्धि-बुद्धि-सहिताय महा-गणपतये नमह, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमाला एवं पुष्प

ॐ भूहू-भुवह सिद्धि-बुद्धि-सहिताय महा-गणपतये नमह, पुष्पमालाम् समर्पयामि।

दूर्वांकुर

ॐ भू-हू भुवह स्वह सिद्धि-बुद्धि-सहिताय महा-गणपतये नमह, दूर्वांकुरान् समर्पयामि ॥

सुगंधित धूप

ॐ भू-हू भुवह स्वह सिद्धि-बुद्धि-सहिताय महा-गणपतये नमह, धूपम् आघ्रापयामि ।

दीप-दर्शन

ॐ भू-हू भुवह स्वह सिद्धि-बुद्धि-सहिताय महा-गणपतये नमह, दीपं दर्शयामि । (हाथ धोलें)

नैवेद्य-निवेदन

विभिन्न नैवेद्य में मोदक, ऋतु के अनुकूल उपलब्ध फल अर्पित करें। नैवेद्य वस्तु का पहले शुद्ध जल से प्रोक्षण करें। धेनु-मुद्रा दिखाकर देवता के सम्मुख स्थापित करें। निम्नांकित मंत्र बोलें :-

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च ।
आहारम् भक्ष्य-भोज्यम् च नैवेद्यम् प्रति-गृह्यताम् ॥
ॐ भू-हू भुवह स्वह सिद्धि-बुद्धि-सहिताय महा-गणपतये नमह, नैवेद्यम् मोदक-मयम् ऋतुफलानि च समर्पयामि ।
ॐ भू-हू भुवह स्वह सिद्धि-बुद्धि-सहिताय महा-गणपतये नमह, आचमनीयम् मध्ये पानीयम् उत्तरा-पोशनम् च समर्पयामि ।

अखंड फल (नारियल)-दक्षिणा अर्पण करे.

ॐ भूहू-भुवह सिद्धि-बुद्धि-सहिताय महा-गणपतये नमह, दक्षिणा व नारिकेल-फलम् समर्पयामि।

नीराजन (आरती)

ॐ भू-हू भुवह स्वह सिद्धि बुद्धि सहित महागणपति आपको नमस्कार है।
कर्पूर नीराजन आपको समर्पित है।

(उसके बाद गणेश भगवान की मूर्ति के सामने हाथ जोड़कर प्रणाम करें आरती लेने के पश्चात आपको हाथ अवश्य धोएँ)

ॐ भूहू-भुवह सिद्धि-बुद्धि-सहिताय महा-गणपतये नमह्, कर्पूर-नीराजनम् समर्पयामि॥

पुष्पाञ्जलि समर्पण

ॐ भूह्-भुवह सिद्धि-बुद्धि-सहिताय महा-गणपतये नमह्, मन्त्र-पुष्प-अंजलि समर्पयामि।

प्रदक्षिणाव क्षमाप्रार्थना

यानि कानि च पापानि ज्ञात-अज्ञात-कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे॥
आवाहनम् न जानामि न जानामि तवार्चनाम्।
यत्-पूजितम् मया देव परि-पूर्णम् तदस्तु मे॥
अपराध सहस्त्राणि-क्रियंते अहर्नीशं मया।
तत्सर्वम् क्षम्यताम् देव प्रसीद परमेश्वर॥

पूजाकर्म समर्पण

अनया पूजया सिद्धि बुद्धि सहिता।

महागणपति प्रियताम् न मम्॥
ॐ ब्रह्मार्पणमस्तु।

ॐ आनंद ! ॐ आनंद !! ॐ आनंद !!!

संकल्प मंत्र pdf | Sankalp mantra PDF

इस लिंक पर जाकर आप आसानी से संकल्प मंत्र पीडीएफ डाउनलोड कर सकते हैं।

संकल्प मंत्र pdf डाऊनलोड लिंक

संकल्प मंत्र के फायदे | Sankalp mantra ke fayed

1. अगर आप लोग संकल्प मंत्र का जाप करते हैं तो आपके मन को एक दिशा मिलती है।
2. संकल्प मंत्र का जाप करने से हमारा मन केंद्रित हो जाता है और ऊर्जा को एक विशेष दिशा प्राप्त होती हैं।
3. अगर कोई व्यक्ति सफलता को प्राप्त करना चाहता है तो संकल्प मंत्र का जाप करके सफलता को प्राप्त करने की गति बढ़ा सकता है।
4. अगर आप देवी देवता का मंत्र जाप करते हैं तो उससे पहले आपको संकल्प लेना चाहिए संकल्प लेने से उनकी कृपा आपके ऊपर हमेशा बनी रहती है और आपके मन को एक लक्ष्य मिल जाता है।

FAQ : संकल्प मंत्र

संकल्प मंत्र क्या होता है?

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु:, ॐ अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे, कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे पुण्य (अपने नगर/गांव का नाम लें) क्षेत्रे बौद्धावतारे वीर विक्रमादित्यनृपते : तमेऽब्दे प्लवंग नाम संवत्सरे दक्षिणायने

संकल्प कैसे लेना चाहिए?

अगर आप लोग संकल्प लेना चाहते हैं तो आपको ही संकल्प लेते समय अपने हाथ में जल , अक्षत तो और फूल लेना है क्योंकि इस पूरी सृष्टि के पंचमहाभूत अग्नि पृथ्वी आकाश वायु और जल मैं से भगवान श्री गणेश को जल तत्व से अधिपति माना जाता है इसीलिए इस संकल्प को लेकर भगवान श्री गणेश के सामने रख दें ताकि बिना किसी कारण बाधा के और भगवान श्री गणेश की कृपा से यह कार्य पूर्ण हो सके।

संकल्प में कितनी शक्ति होती है?

संकल्प एक ऐसी शक्ति है जो मनुष्य के जीवन शैली को सुनिश्चित कर देती है अपने कर्म क्षेत्र के आधार पर मनुष्य अपने बुद्धि विवेक से कर्तव्यनिष्ठ होकर अपने सारे कार्य व्यवहार करता है इसीलिए संकल्प को जीवन की सजीवता का बोध कहा जाता है। आपकी सफलता या विफलता उसके द्वारा किए गए कर्मों पर आधारित होती है और आपके प्रति संकल्प का परिणाम देती है।

निष्कर्ष

जैसा कि आज हमने आप लोगों को इस लेख के माध्यम से संकल्प मंत्र के बारे में बताया संकल्प मंत्र का पाठ कैसे करना है और उसके फायदे क्या है इसके बारे में भी बताया है अगर आपने हमारे स्लिप हो अच्छे से बड़ा है तो आपको इसकी संपूर्ण जानकारी प्राप्त हो गई होगी उम्मीद करते हैं हमारे द्वारा दी गई जानकारी आपको अच्छी लगी होगी और आपके लिए उपयोगी भी साबित हुई होगी।

यदि आपको हमारे द्वारा दी गयी यह जानकारी पसंद आई तो इसे अपने **दोस्तों और परिचितों** एवं **Whats App** और फेसबुक मित्रो के साथ नीचे दी गई बटन के माध्यम से अवश्य शेयर करे जिससे वह भी इसके बारे में जान सके और इसका लाभ पाये . ❤ **क्योकि आप का एक शेयर किसी की पूरी जिंदगी को बदल सकता हैं** ❤ और इसे अधिक से अधिक लोगो तक पहुचाने में हमारी मदद करे. यदि आप हमारी कोई नई पोस्ट छोड़ना नही चाहते है तो हमारा फेसबुक पेज को अवश्य लाइक कर ले , यदि आप हमारी वीडियो देखना चाहते है तो हमारा youtube चैनल अवश्य सब्सक्राइब कर ले . यदि आप के मन में हमारे लिये कोई सुझाव या जानकारी है या फिर आप इस वेबसाइट पर अपना प्रचार करना चाहते है तो हमारे संपर्क बाक्स में डाल दे हम जल्द से जल्द उस पर प्रतिक्रिया करेंगे . हमारे ब्लॉग OSir.in को पढ़ने और दोस्तों में शेयर करने के लिए आप का सहृदय धन्यवाद !
(कुछ नया सीखने की जादुई दुनिया)

★ **जादू सीखे**	☯ **काला जादू सीखे**
☘**पैसे कमाना सीखे**	❤ **प्यार और रिलेशन**

☘ पढ़े थोडा हटके ☘

► पथरी तोड़ने की दवा : बिना ऑपरेशन और दर्द के पथरी निकालने का असान तरीका | Pathri ki dawai

► बॉयफ्रेंड कैसे बनाएं ? लड़के को दोस्त कैसे बनाएं ? how to make boyfriend in hindi ?

► पैरानोर्मल एक्टिविटी क्या होती है – Paranormal activity meaning in hindi | Paranormal activity in Hindi

► सट्टे का अमल : पहले से जाने सट्टे में कौन सा नंबर आयेगा | Satte ka amal

★ सम्बंधित लेख ★

- माँ काली की घर में फोटो रखना चाहिए या नहीं : जाने इसके पीछे का रहस्य
- मूलाधार जागरत करे इंगला पिंगला नाड़ी क्या है ? सीमन रिटेंशन क्या है ? Muladhara chakra activation in hindi
- मच्छर बांधने का मंत्र क्या होता है? मच्छर भगाने के घरेलू उपाय जाने !
- स्वामी समर्थ का तारक मंत्र क्या है : तारक मंत्र जप विधि और लाभ जाने | Swami Samarth Tarak Mantra